ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद 1/164/46
एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से कहते/पुकारते हैं।
The wise men invoke the one God by different names.

वर्ष 37, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 दिसम्बर, 2013 से रविवार 8 दिसम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में 28-30 नवम्बर, 1 दिसम्बर तक डरबन में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रीका-2013 सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत लगभग भारतीय 150 प्रतिनिधि पहुंचे डरबन

वैश्विक स्तर पर आर्यसमाज के संगठन को और मजबूत किए जाने की आवश्यकता

वेद पर आस्था रखने वाले सभी एक हों : आर्यसमाज का आह्वान

श्रीमती उषाबेन देसाई एवं डॉ. रामविलास के नेतृत्व में सफल हुआ सम्मेलन

दक्षिण अफ्रीका क्षेत्र में वैदिक विचारधारा की वृद्धि के लिए लिए गए अनेक संकल्प

डरबन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (विश्व वेद सम्मेलन) के आयोजन स्थल का वृहद् सभागार

सुसज्जित मंच पर सम्मेलन में पधारे संन्यासीगणों का पुष्पमालाओं से स्वागत एवं सम्मान

यज्ञ, प्रवचन एवं अनेक विषयों पर रखे वक्ताओं ने विचार : युवाओं की रही विशेष भागीदारी

महिलाओं और बच्चों पर हो रहे अत्याचारों के विरोध में निकाला विरोध मार्च

सम्मेलन में आयोजित बहुकुण्डिय यज्ञ एवं डरबन पहुंचने पर सभा अधिकारियों का स्वागत

विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी अगले अंकों में

पुस्तक मेलों के माध्यम से आम जनता तक वैदिक साहित्य पहुंचाने का कार्य जारी

हैदराबाद पुस्तक मेले एवं विश्व पुस्तक मेले नई दिल्ली में होगा व्यापक स्तर पर प्रचार

हैदराबाद पुस्तक मेला

स्थान : एन.टी.आर. स्टेडियम, हैदराबाद (आ.प्र.)
7 से 15 दिसम्बर, 2013 : प्रात : 11 बजे

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली
15 फरवरी से 23 फरवरी, 2014

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें। – विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

वेद-स्वाध्याय

तुम उसे नहीं जानते

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

न तं विदाथ य इमा जजानान्त्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।। ऋग्वेद 10/82/7

अर्थ—हे मनुष्यो! तुम ***(तम्)*** उस परमेश्वर को ***(न)*** नहीं ***(विदाथ)*** जानते हो जो ***(इमा)*** इन समस्त लोक-लोकान्तरों को ***(जजान)*** उत्पन्न करता है तथा ***(अन्यत्)*** तुमसे भिन्न दूसरा होकर ***(युष्माकम्)*** तुम्हारे ***(अन्तरम्)*** हृदय में ***(बभूव)*** विद्यमान है। ***(नीहारेण)*** कुहरे के समान अज्ञानान्धकार से ***(प्रावृताः)*** आच्छादित जन ***(जल्प्याः)*** केवल शब्दाडम्बर करने वाले जन ***(चरन्ति)*** अपना पाण्डित्य-प्रदर्शन करते हुये घूमते हैं, परन्तु वे परमात्मा को नहीं जानते।

आज मानव विज्ञान द्वारा प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन करने में लगा हुआ है। नित्यप्रति नयी खोजें और आविष्कार किये जा रहे हैं। विज्ञान ने जीवन की बहुत सारी गुत्थियों को सुलझा लिया है। हमारे इस सौर मण्डल से परे पृथ्वी जैसे एक ग्रह का पता लगाया है जहाँ जीवन की पूरी सम्भावना है। जहाँ जाने में २० प्रकाश वर्ष का समय लगेगा। मंगल एवं दूसरे ग्रहों की छानबीन हो रही है। ब्रह्माण्ड के साथ ही मानव शरीर की एक-एक रचना की छानबीन की जा रही है। किसी व्यक्ति के गुण विशेष उसके गुणसूत्रों में सन्निहित हैं इसका भी विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अन्य क्षेत्रों में भी अनुसन्धान हो रहा है।

परन्तु जिसने प्रकृति में इन सारे गुणों को भरा है, क्या उसे जान पाये। मन्त्र यही बात पूछ रहा है—**न तं विदाथ य इमा जजान** किसी रचना को देख रचनाकार को जानने की जिज्ञासा स्वतः होती है। जिस रचनाकार ने सृष्टि की एक-एक वस्तु की अद्भुत रचना की है, उसकी सत्ता मानने से ही मना कर देना विडम्बना नहीं तो और क्या है। अभी इंगलैण्ड के सुप्रसिद्ध खगोलविद् हाकिन्स महोदय की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें उन्होंने माना है कि सृष्टि का निर्माण भौतिक शास्त्र [फिजिक्स] के सिद्धान्त के आधार पर हुआ है। इसे बनाने वाली कोई ईश्वर जैसी सत्ता नहीं है। वेद इन लोगों के लिये कहता है—**नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति** हे लोगो! जो परमात्मा इन सब भुवनों का बनाने वाला विश्वकर्मा है, उसको तुम लोग नहीं जानते हो, इसी हेतु से तुम **नीहारेण**—अत्यन्त अविद्या से आवृत मिथ्यावाद, नास्तिकवाद से अनर्गल कथन कर रहे हो। तुम लोग **असुतृपः** केवल स्वार्थसाधक, प्राणपोषण मात्र में ही प्रवृत्त हो रहे हो **उक्थशासश्चरन्ति**—केवल विषय भोगों के लिये ही अवैदिक कर्म करने में प्रवृत्त हो रहे हो और जिसने ये सब भुवन रचे हैं, उस सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी परब्रह्म से उलटे चलते हो, अत एव तुम उसको नहीं जानते। [सन्दर्भ-आर्याभिविनय]

विज्ञान की यही त्रासदी है कि वह यन्त्रों के द्वारा प्रयोगशाला में खोजबीन कर रहा है। यन्त्रों की एक सीमा है। जब प्रकृति का ही पूरा ज्ञान यन्त्रों से नहीं हो पा रहा तो प्रकृति से सूक्ष्म जीवात्मा और परमात्मा का ज्ञान सम्भव कैसे हो सकता है। **अन्यद् युष्माकमन्तरं बभूव** जो ब्रह्म तुम्हारी आत्मा में भी तुमसे पृथक् विराज रहा है, उसे जानने के लिये तो योग के साधन धारणा-ध्यान-समाधि का अवलम्बन लेना होगा। उपनिषद् कहती है—

नायमात्मा प्रवचेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥ कठो० २.२३

यह आत्मा बड़े-बड़े भाषण देने या प्रवचन करने से नहीं मिलता। तर्क-वितर्क एवं बहुत पढ़ने-सुनने से भी नहीं मिलता। उचित पात्र समझ जिसका यह वरण कर लेता है वही उसको प्राप्त कर सकता है। ऐसे योग्य पात्र के सामने यह आत्मा अपने स्वरूप को खोलकर रख देता है।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः। नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्॥ कठो० २.२४॥

जो व्यक्ति दुराचार से हटा नहीं, जो अशान्तचित्त है, जो तर्क-वितर्क में उलझा हुआ है और जिसका चित्त चञ्चल है वह केवल ज्ञान मात्र से उसे प्राप्त नहीं हो सकता।

परमात्मा व्यर्थ का जल्प, वितण्डा, ढोंग-पाखण्ड या लच्छेदार भाषण देने से भी प्राप्त नहीं होता। जैसे घने कुहरे में निकटस्थ वस्तु भी दिखाई नहीं देती वैसे ही वह परमात्मा हृदय में विराज रहा है परन्तु अविद्या अन्धकार से अन्तःकरण आच्छादित हो जाने के कारण उसकी अनुभूति नहीं हो रही है। वस्तुतः ब्रह्म साक्षात्कार का विषय है, तर्क-वितर्क का नहीं।

जो वेदान्ती यह कहते हैं कि **अहं ब्रह्मास्मि** मैं ही ब्रह्म हूँ उनके मुख पर यह मन्त्र चपेटिका लगा रहा है और कह रहा है—अरे भोले लोगो! वह ब्रह्म **अन्यद् युष्माकमन्तरं बभूव** तुम से भिन्न, दूसरा होकर तुम्हारे हृदय में विराजमान हो रहा है। जीव अविद्यादि दोषयुक्त, एक देशी, अल्पज्ञ है और ब्रह्म सदैव ज्ञानी, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होने से जीव और ब्रह्म एक कदापि नहीं हो सकते।

वर्तमान समय में ब्रह्म के दर्शन कराने वालों की बाढ़ आई हुई है। ये लोग सिद्ध जैसा भेष बना, मौनी बाबा बन अपने शिष्यों के मध्य में सिद्ध पुरुष जैसी बात करते हैं जैसे इन्हें सचमुच ही ब्रह्म का साक्षात्कार हो गया हो परन्तु वे जल्प करने वाले, प्राणों के पोषक और उधर-उधर के कुछ मन्त्र, श्लोक, दोहे, गीत आदि सुना कर अपना पाण्डित्य प्रदर्शन कर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। उसे जानने का मार्ग उपनिषद् बतला रही है—

यच्छेद् वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद् यच्छेज्ज्ञान आत्मनि। ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत् तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि॥

कठो० ३.१३

ज्ञानी व्यक्ति को चाहिये कि मन, वाणी को प्रथम एकाग्र करे और मन को बुद्धि में समाहित करे बुद्धि को आत्मा में और आत्मा को परमात्मा जो शान्ति और आनन्द का भण्डार है, उसमें निमग्न कर दे। **अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति।** (कठो० ४.१२) अंगूठे जितने हृदयान्तरिक्ष में आत्मा में प्रविष्ट हुआ वह परमात्मा विराज रहा है जिसका साक्षात्कार योगी लोग समाधि में करते हैं।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज रानी बाग मेन रोड द्वारा एकत्र राशि

849	सर्वश्री रामचद्र आहूजा एवं श्रीमती सरोज आहूजा	11000
850	दीपक आहूजा	2100
851	सन्दीप आहूजा	2100
852	के. एल. वीर	1100
853	रामलाल	1100
854	श्रीमती इन्दू आर्या	500
855	जयदेव मल्होत्रा	500
856	कुलभूषण कुकरेजा	500
857	नारायण दास गांधी	500
858	रामलाल आहूजा	500
859	सूरभान आर्य	100
860	नरायण दास आर्य	500
861	कृष्ण कुमार साहनी	500
862	चन्द्रभान ग्रोवर	500
863	तोएश भाटिया	500
864	सत्यपाल सजाना	500
865	प्रेमप्रकाश आर्य	250
866	वीरेन्द्र सैंदी	500
867	वी. के. पाहूजा	2100
868	अशोक कुमार	500
869	कमल कालरा	250
870	शंकर दास चौधरी	500

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 91001000898 4897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

अंधविश्वास निर्मूलन सम्बन्धी लेख

चाहो सफल गृहस्थ तो, गुण मिलाकर विवाह कभी न करना

- आचार्य दार्शनेय लोकश

शीर्षक को देखने से पाठकों को लग सकता है कि हम 'गुण विरोधी' अर्थात् अच्छाइयों के विरोध में अपनी बात कह रहे हैं। वस्तुत: ऐसा नहीं है। वास्तव में यहां गुण से हमारा तात्पर्य कपोल-कल्पित नक्षत्रों और संस्कृत अथवा हिन्दी वर्णमाला के अतिरिक्त ली गई वर्णमाला से निर्धारित तथा कथित 36 गुणों से है जो विवाह मेलापक के लिए लिये गये हैं । हम अनुरोध ही नहीं आग्रह पूर्वक स्पष्ट करना चाहेंगे कि ज्योतिष ही नहीं समाज के कल्याण के लिए गम्भीर उत्तरदायित्व को समझते और निभाते हुए यह लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसको भावनात्मक तरीके से नहीं अपितु ज्योतिष के यथार्थ संज्ञान युक्त विवेक से लिया जाए।

''ज्योतिष में दृष्टि, सर्वाधिक व्यक्ति पर केन्द्रित होती है। धर्ममय जीवन यापन करते हुए अर्थ उपार्जन कर काम और मोक्ष सिद्धि हेतु दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने से पूर्व वर-वधु के गुणों का आंकलन तथा ग्रह मेलापक विधान ज्योतिष (शास्त्र विज्ञान) में निरूपित किया गया है।

यदि जन्मपत्री वैज्ञानिक आधार पर न बनी हो, नकली हो, मात्र नाम से मेलापक किया गया हो, विद्वान और चरित्रवान् ज्योतिष द्वारा निष्कर्ष न लिया गया हो तो मेलापक 'मुहुर्त चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ की रचना की, वे ज्ञान की नगरी काशी के विद्वान् थे। उन्होंने मुहुर्त चिन्तामणि के गोचर प्रकरण, संस्कार प्रकरण, विवाह प्रकरण, वधु-प्रवेश प्रकरण, द्विरागमन प्रकरण में मुहूर्तों को पृष्ठभूमि में रखकर वर-वधु चयन पर सूक्ष्म गवेषणा की है।''

हमने हिन्दी मासिक 'हलन्त' के माह दिसम्बर के अंक में प्रकाशित ''ज्योतिष और जीवन'' लेख में उपरोक्त विचार बिन्दुओं का संज्ञान लिया है। आइये, देखिये कि कैसे इन बिन्दुओं पर कुछ स्वाभाविक प्रश्न उपजते हैं-

-यदि जन्मपत्री वैज्ञानिक आधार पर न बनी हो तो क्या जन्मपत्री अवैज्ञानिक भी हो सकती है?

-विद्वान् और चरित्रवान् ज्योतिष..... श्रद्धा से भरा जातक यह कैसे जान सकता है कि जो व्यक्ति उन्हें जन्मपत्री और तद्विषयक मार्गदर्शन दे रहा है वह विद्वान् और चरित्रवान् भी है? स्वाभाविक है कि जब तक देश की शासन व्यवस्था जन्मपत्री और उसके व्यावसायिक प्रयोग हेतु मानदण्ड स्थापित नहीं करती तब तक न तो जन्मपत्री की वैज्ञानिकता की परख हो सकती है और ना ही ज्योतिष की योग्यता की।

-दैवज्ञ श्री राम ने शाके 1522 में मुहूर्त चिन्तामणि नामक ग्रन्थ की रचना की प्रश्न यह है कि यदि शाके 1522 में उपरोक्त ग्रन्थ रचना के बाद ही वर-वधु चयन पर सूक्ष्म गवेषणा हुई है तो क्या शाके 1522 से पूर्व के विवाह बिना सूक्ष्म गुण मेलापक के ही होते थे अत: क्या वे आज की अपेक्षा अधिक असफल भी होते थे?

जहां तक वैज्ञानिकता की बात है तो हम पाठकों को कुछ आधार बिन्दु स्पष्ट करना चाहते हैं-

अथर्ववेद के 19/7/2-5 में 25 नक्षत्र स्पष्ट हैं जबकि फलित ज्योतिष में, गणितीय सुविधा के कारण से, 27 ही स्वीकार किये हैं। वैदिक, सनातन या हिन्दू जन आदि कुछ भी कहें, के लिये वेद स्वत: प्रमाण सर्वोपरि स्वीकार्य एवं नियामक है। प्रश्न उठता है कि हम वेद के विरुद्ध क्यों चलें? और चलें तो इस एक कारण बिन्दु से क्या हम वेद विरुद्ध नहीं हो जाते? मनुस्मृति तो स्पष्ट करती है कि **नास्तिको वेद निन्दक:।**

सूर्य सिद्धान्त एवं आधुनिकी की वेधशालाओं द्वारा स्पष्ट दृश्यमान स्पष्ट प्रमाण करता है कि नक्षत्र समान विस्तार वाले नहीं है। प्रश्न है कि प्रत्येक नक्षत्र 800 कला का क्यों लिया गया है? जिस प्रकार कल्पित अग्नि से हाथ नहीं जलता उसी प्रकार क्या ये कल्पना से गढे गए नक्षत्र और पुन: उनके काल्पनिक चरण तथा तदनुरूप उनके काल्पनिक गुण क्या किसी भी तरह से वैज्ञानिक हो सकते हैं? क्या ऐसे अयथार्थ नक्षत्र युक्त फलित ज्योतिष आकलन किसी भी वास्तविक जातक के जीवन को प्रभावित कर सकता है?

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी पुस्तक ''दर्शन-दिग्दर्शन'' के पृष्ठ 560 में स्पष्ट किया है कि भारत ने यूनानी ज्योतिष से 12 राशियां, होरा (=घण्टा), फलित ज्योतिष का होडाचक्र सीखा, होडाचक्र की वर्णमाला भारतीय (क ख ग....) अपितु यूनानी (अल्फा-बीटा-गामा..) है।

ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् शास्त्री भोलादत्त महीतौल्य कहते हैं कि ''होड़ाचक्र में अक्षरों का वितरण एकदम व्याकरण विरुद्ध हैं संस्कृत व्याकरण को पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि ने इनते निर्दोष रूप से संवारा है कि अध्येता चमत्कृत हो उठते हैं। लघु सिद्धान्त कौमुदी में वर्णों के उच्चारण स्थान, अन्तर्बाह्य प्रयत्न और अकारादि स्वरों के सभी भेदों का वर्णन किया गया है, पहला इनके स्पष्टरूपेण उच्चारित होने से पूर्व और दूसरा उच्चारण क्रिया के उपरान्त जिनको क्रमश: आभ्यान्तर और ब्राह्य प्रयत्न कहते हैं। पाणिनि के '**तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्**' सूत्रानुसार जिन दो या अधिक वर्णों के उच्चारण स्थान और आभ्यान्तर प्रयत्न एक जैसे होते हैं वे सभी वर्ण, सवर्ण कहलाते हैं और भिन्न प्रयत्न वाले परस्पर असवर्ण कहलाते है। इस नियम के अनुसार केवल भरणी, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, श्रवण और धनिष्ठा को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों के अक्षर विजातीय बन जाते हैं। यह हमारे जातक ग्रन्थों की व्याकरण विरुद्ध एक विडम्बना है जिसे हम ढोते चले आ रहे हैं और न जाने कब तक ढोते रहेंगे? क्या लाभ है ऐसे 'अवकहड़ा चक्र' का जिसमें ञ, ड़, ण, झ को तो स्थान प्राप्त हो किन्तु जू, जे, जो को कोई स्थान न मिला हो, ओ-औ वो-बौ को सजातीय मान लिया गया हो? शंकर व संकर शब्दों में कोई भेद न हो और विश्वेश्वर और बिश्वेश्वर को एक समान मान लिया गया हो? अतएव, अब समय आ गया है कि देश के पंचागों में दिये जाने वाले नक्षत्र भोगांशा, शतपदचक्र आदि को सुधार लेना चाहिये।''

प्रश्न यह है कि ज्ञान की नगरी काशी के विद्वान् दैवज्ञ श्री राम को यह तथ्य क्यों नहीं दिखाई दिया कि जिस वर्णमाला को वे 27 नक्षत्रों के 108 चरणों के लिये विभाजित कर रहे हैं वह भारतीय नहीं है, हिन्दी या संस्कृत व्याकरण के आधार पर भी नहीं हैं। ऐसी व्यवस्था को देकर उन्होंने भारतीय जनमानस को पुष्ट किया है या कि ....???

सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध ज्योतिषाचार्य डॉ. रहिमाल प्रसाद तिवारी की सुनिये, 'पंचाग और उनमें विहित '**अवकहडा चक्र**' को मैं अवैज्ञानिक ही नहीं अपितु अत्यन्त निकृष्ट-असभ्य प्राविधान मानता हूं। देखिये, बालक का जन्म होते ही जातक के पिता पण्डित जी से पूछते है कि क्या बालक का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ है? मैं शान्ति करवा दूंगा। इस बालक का चुटका (जन्मपत्री, टेवा) बना दीजिये। पण्डित जी चुटका बनाकर देते हैं और उसमें लिखते है-

जातक का जन्म नक्षत्र 'मूल तृतीय चरण', राशि नाम का पहिला अक्षर 'भा' योनि-श्वान, गण-राक्षस, नाडी- आदि, जन्म लग्न-कर्क, राधि धनु .....ह०..... ज्योतिषाचार्य, ज्योतिष भास्कर इत्यादि।

'अवकहडा चक्र' के अनुसार नवजात शिशु को श्वान योनि का कहना क्या उस बालक को 'कुत्ते की औलाद' कहकर गाली देने के समान असभ्य और निकृष्ट आचरण नहीं है? यह अपशब्द उस बालक के माता-पिता तथा पूर्वजों के लिये भी गाली है। वह भी उस 'यजमान' के साथ जिसने कि मिठाई का डिब्बा और पचास रुपये देकर चरणस्पर्श किये हैं।''

प्रश्न यह है कि मूल नक्षत्र के तृतीय चरण से जुड़ा हुआ भा-श्वान-राक्षस आदि किसी गणितीय अथवा वैज्ञानिक आकलन के परिणाम है अथवा पूर्वोक्त 27 नक्षत्र एवं उनके 108 चरणों मंगली होने या मंगली न होने का भी है।

पृथ्वी हर समय क्रान्तिवृत में उपलब्ध होती है और मनुष्य पृथ्वी में। पृथ्वी के पूर्व भाग में सूर्योदय होता है वहां उदय हो रहा लग्न भाग (क्रान्तिवृत का खण्ड) लग्नोदय कहलाता है। चूंकि देखने वाला व्यक्ति चित्रा या किसी भी नक्षत्र में नहीं होता है, अस्तु, लग्नोदय काल जो दिख रहा है वह पृथ्वी की वर्तमान स्थिति का दृश्यमान बिन्दु होता है। स्पष्ट है कि यह बिन्दु कभी भी निरयन लग्न युक्त जन्मपत्रिका स्वयं में एक शुद्ध पत्रिका, वैज्ञानिक पत्रिका हो ही नहीं सकती। प्रश्न यह है कि विद्वान् या अविद्वान् जहां सभी लोग जन्मपत्र को अशुद्ध ही ले रहे हों वहां ऐसी स्थिति में गुण मिलान ही नहीं पत्रिका मिलान भी कैसे शुद्ध अथवा अर्थपूर्ण हो सकता है? जो नहीं, कभी भी नहीं-कभी भी नहीं।

यह स्पष्ट किये जाने के बाद भी कि नक्षत्रों के गुण एक व्यक्ति ने अपने कल्पना लोक से निर्धारित किये हैं वे तर्कसंगत अथवा सैद्धान्तिक नहीं कहे जा सकते हैं, वह व्यक्ति तो जनकल्याण की छदम् भावना को आरोपित करके समाज में एक मिथ्या को स्थापित किये हुये है। बात यहीं पूर्ण नहीं होती, मान लीजिये कि एक व्यक्ति का जन्म 05 अक्टूबर 2013 को 18.00बजे दिल्ली में हुआ है। प्रचलित पंचागों के अनुसार इस बालक का जन्म नक्षत्र चित्रा, प्रथम चरण अत: तदनुसार व्याघ्र योनि, वैश्य वर्ण, राक्षस गण, मध्य नाड़ी हुआ। किन्तु वास्तव में (देखें श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक सं. 2070 पृ. 60) इस बालक का जन्म नक्षत्र हस्त, प्रथम चरण हुआ अत: तदनुसार महिष योनि, वैश्य वर्ण, देव गण तथा आदि नाड़ी हुई। प्रश्न यह है कि यदि इस व्यक्ति के गुण मेलापक चित्रा प्रथम चरण के जन्म

- शेष पृष्ठ 4 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) | **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। - **अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)**

पृष्ठ 3 का शेष

चाहो सफल गृहस्थ तो, गुण .....

नक्षत्रानुसार मिलाये जायेंगे तो मिलान का औचित्य क्या है? इस अनौचित्य का, जहां गुणों की निर्थरकता और गुणों की सिद्धान्तहीनता स्पष्ट हो वहां गुणों के आधार पर गृहस्थ को प्रभावित करने वाली नियामकता नहीं मानी और जानी जा सकती है। अस्तु स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति गुण मिलान के आधार पर विवाह करता और करवाता है तो यह नितान्त कल्पना लोक की वृथा सैर कर रहा है। इस सब का सत्य, सिद्धान्त, तर्कसंगत अथवा वैज्ञानिकता से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है।

राशि से नक्षत्रों का एक स्थिर सम्बन्ध नहीं है और ना ही हो सकता है। लेकिन यहां यह स्थिर सम्बन्ध बना हुआ मानकर और पुन: नक्षत्रों से वर्ण (1 गुण), वश्य (2 गुण), तारा (3 गुण), योनि (4 गुण), ग्रह मैत्री (5 गुण), गण मैत्री (6 गुण), भकूट (7 गुण) और नाड़ी (8 गुण), के कुल 36 गुणों (8×9/2 गुण) का निर्धारण किया गया है जिसकी कोई आधार गणना नहीं है। नक्षत्र विशेष के भाग विशेष (अर्थात् नक्षत्र के चरण विशेष) में जन्म होने से वह निर्धारित वर्ण वैश्यादि के कुल गुण उन जातकों (लड़का या लड़की) के परस्पर मेलापक बिन्दु स्वीकार किये जाते हैं। ग्रह मिलान, मंगली दोष और कथित ज्योतिषी की अपनी अभिरूची की बातें, इसमें बाकी रह जाती हैं। उन पर लिखना इस लेख का विषय नहीं है। इस प्रकार कम से कम 18 गुण मिलने पर मेलापक बिन्दुओं की अनुकूलता मान ली जाती है। सच्चाई यह है कि 36 गुण मिलान वालों के गृहस्थ बर्बाद एवं 8 गुण मिलान वालों के भी बखूबी आबाद गृहस्थ देखे जा सकते हैं। परन्तु इन ज्योतिषचारियों के तर्कजाल ऐसे हैं कि घटित घटना को सिद्ध करने के लिए, वक्त जरूरत के अनुसार कई 'रेडिमेड' जवाब रखे-रखाये होते हैं। जहां जैसी आवश्यकता हुई तदानुकूल 'जवाब हाजिर'। अधिक क्या, समझदारों को संकेत ही पर्याप्त है।

अस्तु, ये गुण, गुण नहीं, आपको भटकाने वाले दुर्गुण हैं जो कभी भी निर्णायक नहीं हो सकते। यदि आप चाहते हैं कि आपके पुत्र अथवा पुत्री का गृहस्थ सफल व अपने आप में परिपूर्ण हो तो उसका विवाह गुण मिला कर कभी न करना। हां, देखने को शिक्षा-दीक्षा व संस्कार जनित गुणवत्ता, आयु, आरोग्य और आवश्यक लगे तो चिकित्सकीय सम्मति पर्याप्त है। संस्कृतिपरक है कि नीचादपि उत्तमा विद्या, कन्या दुष्कुलादपि।

- श्री मोहन कृति आर्ष तिथिपत्रक,
सी-276, गामा-1, ग्रेटर
नोएडा-201310 (उ.प्र.)

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH हवन सामग्री
मात्र 70/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

आर्यसमाज के संस्थापक, वेदोद्धारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
से प्रेरणाप्राप्त आचार्य राम देव जी द्वारा स्थापित

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

रविवार 22 दिसम्बर, 2013 : देहरादून

★यज्ञ : प्रात: 9 बजे ★ध्वजारोहण : प्रात: 10 बजे
★ सांस्कृतिक कार्यक्रम ★विद्वानों के उद्बोधन

87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभायात्रा

सोमवार 23 दिसम्बर, 2013 : हरिद्वार

★यज्ञ : प्रात: 8:00 बजे ★शोभायात्रा : प्रात: 9:00 बजे
★सार्वजनिक सभा : दोपहर 1:00 बजे
★ पुण्यभूमि दर्शन : सायं 4:00 बजे

आर्य बन्धुओं! हम सबके लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय है कि देवभूमि उत्तराखण्ड में जहां के कण-कण में सज्जनता, सोम्यता, देवत्व और तेजस्विता सुवासित होती है, वहां आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने तपश्चर्य से, त्याग से पल्लवित-पुष्पित भूमि कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिनका बलिदान 23 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में हुआ।

उन्हीं की प्रेरणा से आर्यसमाज के कर्मठ नेता आचार्य रामदेव जी द्वारा नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने, उन्हें भारतीय वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने के लिए कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की आज से 90 वर्ष पूर्व 22 दिसम्बर को स्थापना की गई।

दोनों ही अवसर आर्यसमाज के लिए गर्व का विषय है। अत: आपसे निवेदन है कि आप दोनों कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अवश्य पधारें। आपके आवास, भोजन की व्यवस्था गुरुकुल परिसर में की जाएगी। कृपया पधारने की पूर्व सूचना अवश्य दें। बिना पूर्व सूचना के रात्रि विश्राम की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं हो सकेगा। आर्यसमाजों से निवेदन है कि अभी से बसों आदि की बुकिंग करा लें तथा सूचित करें कि आपकी बस कब पहुंचेगी और कितने महानुभाव आएंगे, जिससे आवास आदि की व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

महाशय धर्मपाल, अध्यक्ष, आर्य विद्या सभा
डॉ. रामप्रकाश, कुलाधिपति; डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
आचार्य विजयपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
आचार्य यशपाल, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी
डॉ. सविता आनन्द, प्रबन्धक, कन्या गुरुकुल देहरादून
सुदर्शन शर्मा, प्रधान, आ.प्र. सभा पंजाब
ई. हजारीलाल अग्रवाल, प्रधान, आ.प्र. सभा उत्तराखण्ड

गुरु से बड़ा कौन - ईश्वर

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय।।

गुरुड्म की दुकान चलाने वाले कुछ अज्ञानी लोगों ने कबीर के इस दोहे का नाम लेकर यह कहना आरम्भ कर दिया है कि ईश्वर से बड़ा गुरु है क्योंकि गुरु ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताता है। एक सरल से उदहारण को लेकर इस शंका को समझने का प्रयास करते हैं। मान लीजिये कि मैं भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से मिलने के लिये राष्ट्रपति भवन गया। राष्ट्रपति भवन का एक कर्मचारी मुझे उनके पास मिलवाने के लिए ले गया। अब यह बताओ कि राष्ट्रपति बड़ा या उनसे मिलवाने वाला कर्मचारी बड़ा है?

आप कहेंगे कि निश्चित रूप से राष्ट्रपति कर्मचारी से कहीं बड़े हैं, राष्ट्रपति के समक्ष तो उस कर्मचारी की कोई बिसात ही नहीं है। यही अंतर उस गुरुओं की भी गुरु ईश्वर और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताने वाले गुरु में हैं। हिन्दू समाज के विभिन्न मतों में गुरुड्म की दुकान को बढ़ावा देने के लिए गुरु की महिमा को ईश्वर से अधिक बताना अज्ञानता का बोधक है। इससे अंध विश्वास और पाखंड को बढ़ावा मिलता है।

- डॉ. विवेक आर्य

श्री अर्जुनदेव चड्ढा का 'आर्यसेवाश्री' उपाधि से सम्मान

आर्यसमाज रावतभाटा के 47वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज रावतभाटा तथा विभिन्न

संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वाधान में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा को 'आर्य सेवाश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्वान अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि शास्त्रों में परोपकार का बड़ा महत्त्व बताया गया है और अर्जुनदेव चड्ढा उसका सबसे बड़ा उदाहरण है आपके द्वारा निराश्रित, कुष्ठरोगी, अनाथ लोगों की जो सेवा की जा रही है वह अतुलनीय है।

भोपाल में भी हुए सम्मानित : राष्ट्रीय पंजाबी महासंघ के भोपाल में सम्पन्न हुए दो दिवसीय अधिवेशन में राजस्थान के जाने माने समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। भोपाल के वृंदावन के खचाखच भरे सभागार में करतल ध्वनि के बीच मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष इंजी. डी.के. कपूर, महासचिव जी.आर. गांधी व राजस्थान जोन के अध्यक्ष दीवानचन्द सेतिया ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं बुके देकर श्री चड्ढा को सम्मानित किया।

देहरादून चलो! ओ३म् हरिद्वार चलो!

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह, स्वामी श्रद्धानन्द 87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभा यात्रा हरिद्वार एवम्

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय संग्रहालय दर्शन कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 21 दिसम्बर से सोमवार 23 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यात्रा व्यवस्था

2X2 की पुश-बैक डीलक्स बसों द्वारा आना-जाना, धर्मशाला में रहना, हरिद्वार भ्रमण, भोजन व्यवस्था तथा शोभायात्रा के लिए टोपी/दुपट्टा व झंडा आदि सेवाएँ हेतु प्रति व्यक्ति 1000 रुपये मात्र देय होगा।

दिनांक	समय	कार्यक्रम
21.12.2013	रात्रि: 9.00 बजे	देहरादून को प्रस्थान
22.12.2013	प्रात: 6.00 बजे	देहरादून पहुँचकर नित्य कर्म से निवृत होना
	प्रात: 8.00 बजे	आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में नाश्ता व 90वें वार्षिकोत्सव में शामिल होना।
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोहपर 2.00 बजे	हरिद्वार को प्रस्थान व हर की पौढ़ी भ्रमण
	सायं 6.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी पहुँचना, भोजन व धर्मशाला में रात्रि विश्राम
23.12.2013	प्रात: 8.00 बजे	नाश्ता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में
	प्रात: 9.00 बजे	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोपहर 2.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी संग्रहालय दर्शन
	सायं 5.00 बजे	दिल्ली के लिए प्रस्थान
	रात्रि 10.30 बजे	दिल्ली पहुँचना

नोट : (1) अपने नजदीकी क्षेत्रानुसार संयोजक को पूरी धनराशि जमा करायें। (2) गर्म कपड़े, शाल/दुशाला ले कर चलें। (3) सीट बुक होने के पश्चात् धनराशि वापिस नहीं की जाएगी यह हस्तांतरित हो सकती है।

निवेदक :

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष - आर्य विद्या सभा
ब्र. राज सिंह आर्य प्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य व. उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
ओम प्रकाश आर्य उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विनय आर्य महामंत्री - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
राजीव आर्य महामंत्री - आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मुख्य संयोजक : **सतीश चड्डा**, आर्यसमाज कीर्तिनगर (मोबाईल : 9540041414, 9313013123)

क्षेत्रीय संयोजक : *पश्चिमी दिल्ली :* **रमेश चन्द्र** (सी-2, जनकपुरी, 9868242404), **वीरेन्द्र सरदाना** (ए-ब्लॉक, जनकपुरी, 9911140756), **ललित चौधरी** (विकासपुरी, 9911140756), **राजेन्द्र लाम्बा** (पश्चिम विहार, 9873697099), *पश्चिम-उत्तरी दिल्ली :* **जोगेन्द्र खट्टर** (रानीबाग, 9810040982), **सुरेन्द्र आर्य** (रोहिणी, 9811476663), *उत्तरी दिल्ली :* **महेन्द्र सिंह** (ओचन्दी, 9999148483), **मनवीर सिंह राणा** (केशवपुरम, 9971823677), *केन्द्रीय दिल्ली :* **अरूण प्रकाश वर्मा** (हनुमान रोड, 9810086759), *पूर्वी दिल्ली :* **अभिमन्यू चावला** (शाहदरा, 9013967759), **ईश कुमार नारंग** (दयानन्द विहार, 9911160975), **जगदीश मल्होत्रा** (कृष्णा नगर, 9013013802), *दक्षिणी दिल्ली :* **एस.पी. सिंह** (मेहरौली, 9868111709), **गोविन्द लाल नागपाल** (ग्रीन पार्क, 9811623552) **नरेन्द्र नारंग** (ईस्ट ऑफ कैलाश, 9810140975), **सुरेशचन्द** (गोविन्दपुरी, 9212082892), **चत्तर सिंह नागर** (मस्जिद मोठ, 9211501545)

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

चौराहे पर खड़े होकर बेचे ''सत्यार्थ प्रकाश''

महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' कोटा महानगर के भीड़ भरे चौराहे चौपाटी बाजार में आर्य समाज जिला सभा कोटा के पदाधिकारियों ने 500 पृष्ठों का 50 रु. कीमत का सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रु. में आवाज लगा-लगाकार बेचा। आर्य समाज जिला के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा माइक से सत्यार्थ प्रकाश की विशेषताएं बता रहे थे। ईश्वर का सच्चा स्वरूप ईश्वर के नामों की व्याख्या, समस्त मत मतान्तरों की विवेचना, आश्रम व्यवस्था आदि सत्यार्थ प्रकाश में है। इससे प्रभावित होकर मुस्लिम, सिख, छात्र-महिलाएं लाइन लगाकर सत्यार्थ प्रकाश खरीद रहे थे।

सिंधी समाज के गिरधारी पंजवानी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट : संत कंवरराम साहेब के 74 वें वर्सी महोत्सव के अवसर पर आर्य समाज जिला सभा की ओर से समिति के अध्यक्ष गिरधारीलाल पंजवानी को आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने महर्षि दयानन्द रचित अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। इस अवसर पर गिरधारीलाल पंजवानी ने कहा कि आर्यसमाज असहायों की सहायता करता है।

तीन पीढ़ीयों के सदस्यों के साथ नेत्रदान का संकल्प

नेत्रदान के प्रति जागरूकता लगातार बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में एक परिवार ऐसा भी है जहां मरणोपरान्त नेत्रदान करना एक परम्परा बन चुका है।

जिला प्रधान आर्य समाज कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा का परिवार इसका एक उदाहरण है जिनके घर में पहला नेत्रदान वर्ष 1987 में उनके पिताजी श्री रामलाल चड्ढा जी का हुआ, जिस समय नेत्रदान के बारे में जानकारी का अभाव था। इसके बाद उनकी पत्नी श्रीमती संतोष चड्ढा जी का देहान्त वर्ष 1997 में हुआ उनका भी नेत्रदान किया गया। इसी तरह वर्ष 2010 में इनके बड़े भाई श्री बलदेव राज चड्ढा का भी नेत्रदान किया गया।

आज सम्पूर्ण परिवार के 18 सदस्यों ने एक साथ इस नेक कार्य नेत्रदान महादान का संकल्प लिया जिसमें तीन पीढ़ीयां शामिल रही। 18 वर्षीय साक्षी ने कहा कि मेरे दादी के नेत्रदान होने के कारण वो आज भी इस दुनिया में मौजूद है और अमर हैं। इसी तरह मैंने भी नेत्रदान का संकल्प किया है, जिससे मैं मृत्यु के बाद भी किसी नेत्रहीन को रोशनी देकर जीवित रह सकूं।

शाइन इण्डिया फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. कुलवन्त गौड़ ने बताया कि संस्था शाइन इण्डिया के सदस्य घर-घर जाकर भी नेत्रदान के संकल्प पत्र भर रहे हैं और साथ ही नेत्रदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर कर नेत्रदान की सम्पूर्ण जानकारी देते हैं।

- सचिव, शाइन इण्डिया फाउंडेशन

मंडन के साथ-साथ खंडन भी क्यूँ आवश्यक हैं?

कुछ मित्रों का यह मत हैं कि आर्यसमाज को केवल मंडन करना चाहिए खंडन नहीं करना चाहिए। एक आर्यसमाजी अध्यापक से यह शंका एक छात्र के अभिभावक महाशय ने की थी। अध्यापक ने उत्तर दिया कि इसका उत्तर समय आने पर आपको मिलेगा। संयोग से दो दिन के पश्चात ही उस छात्र की परीक्षा थी। अध्यापक ने उस छात्र की उत्तर पुस्तिका में सभी गलत प्रश्नों को भी सही कर दिया और उसे अभिभावक ...को दिखाने के लिये कहा। अभिभावक ने जैसे ही उत्तर पुस्तिका में सभी गलत उत्तरों को सही देखा तो अगले दिन अध्यापक से वे मिलने आये। जब उन्होंने गलत उत्तर को भी सही करने का कारण पूछा तो आर्य अध्यापक ने बड़े प्रेम से उत्तर दिया। महाशय जी आप ही ने तो कहा था कि खंडन मत किया करो केवल मंडन किया करो, मैंने आप ही की बात का ही तो अनुसरण किया है। आपके बेटे के सभी सही के साथ-साथ गलत उत्तर को भी सही कर दिया, किसी का भी खंडन नहीं किया। धार्मिक जगत में भी धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की भ्रांतियां और असत्य बातों का समावेश कुछ अज्ञानी लोगों ने कर दिया है, यह कुछ-कुछ ऐसा है, जैसा एक किसान के खेत में फसल के साथ खर-पतवार का भी उग जाना, अब आप बतायें कि अगर किसान उस खर-पतवार को नहीं हटायेगा तो उसकी फसल का क्या हाल होगा? हिन्दू समाज में आध्यात्मिकता का भी यही हाल है, नाना प्रकार के अन्धविश्वास, नाना प्रकार की मिथ्या प्रपंच, नाना प्रकार के गुरुडम के खेल, नाना प्रकार की देवी देवताओं के नाम पर कहानियाँ रच ली गई हैं, जिनका सत्य से दूर दूर तक भी किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। उनका अगर खंडन नहीं करेंगे, तो क्या करेंगे? महाशय जी चुप हो गये, उन्होंने सोचा कि बात तो सही है, खंडन करना चाहे कड़वा हो मगर है तो आवश्यक। आज हिन्दू समाज की दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण अन्धविश्वास और धर्म के सही अर्थ को न समझना है।

- डॉ. विवेक आर्य

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को 'वेद वेदांग गौरव' सम्मान

विलक्षण प्रतिभा के धनी, उच्चकोटि के वैदिक चिंतक, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज महावीर नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में **'वेद वेदांग गौरव सम्मान** से विभूषित किया गया। यह सम्मान आचार्य जी की वैदिक धर्म प्रचार की सफल कनाड़ा यात्रा की सम्पन्नता के लिए उन्हें प्रदान किया गया। इस सम्मान समारोह के अध्यक्ष श्री ओ. पी. बब्बर, मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य, श्री राजीव बब्बर, समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी द्वारा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को शाल, पुष्पमाला, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द चैरिटेबल डिस्पेन्सरी और डायग्नास्टिक सैन्टर का उद्घाटन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामंत्री श्री विनय आर्य भी उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि श्री सत्यनारायण डंग, श्री ललित चौधरी, श्री बलदेवराज आर्य आदि महानुभावों ने भी समारोह को सम्बोधित किया।

- दिनेश आर्य, कोषाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयादनन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 26, 27, 28 फरवरी 2014 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- रामनाथ सहगल, मन्त्री

आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली का

20वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेदीय यज्ञ

11 से 15 दिसम्बर, 2013
यज्ञ : प्रात: 7:30 से 9:00 बजे
ब्रह्मा : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
भजन : कुंवर उदयवीर आर्य
आर्य महिला सम्मेलन : 14 दिसम्बर
दोपहर 2 से 5 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
15 दिसम्बर, 2013

- विश्वास वर्मा, मन्त्री

आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर को प्रदेश में वैदिक प्रचार-प्रसार के लिये एक ब्रह्मचारी प्रचारक एवं एक भजनोपदेशक की आवश्यकता है। उचित वेतन व रहने की व्यवस्था सभा की तरफ से होगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जायेगी। प्रार्थी अपना विवरण सभा के वर्तमान कार्यालय : आर्य समाज मन्दिर, बलिदान भवन, बक्शी नगर, जम्मू-180001 पते पर भेजने के पश्चात प्रधान/मन्त्री जी से सम्पर्क करें।

-भारत भूषण आर्य, प्रधान
9419133884, 9419138880

आर्यसमाज गांधीधाम के अन्तर्गत

वैदिक सत्संग समारोह

13 से 15 दिसम्बर, 2013
स्थान : वैदिक संस्कार केन्द्र, इफ्को कालोनी, वार्ड-10 बी/सी, गांधीधाम
यज्ञ : प्रात: 8 से 9:30 बजे
सम्मेलन : 10 से 1 व 4 से 6:30 बजे
विद्वत्गण - पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री, आचार्या नन्दिता शास्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं. सत्यानन्द जी वेद वागीश

- वाचोनिधि आर्य, महामन्त्री

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राजस्थान का

योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर

24 से 31 दिसम्बर, 2013
आयोजक : आर्यसमाज शास्त्री चौक, बालोतरा, बाडमेर (राजस्थान)
शिविर शुल्क : 400/- रुपये

- भवेदश शास्त्री, प्रान्तीय मन्त्री
फोन : 0141-2621879

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म.प्र.) का

वार्षिकोत्सव

13 से 15 दिसम्बर, 2013
यज्ञ, भजन, प्रवचन, एवं विभिन्न सम्मेलन

- आचार्य सत्यसिंधु आर्य, प्रधानाचार्य

आर्यसमाज नोएडा का

वार्षिकोत्सव एवं वेद कथा

18 से 22 दिसम्बर, 2013
यज्ञब्रह्मा : आचार्य जयेन्द्र कुमार
वेद कथा : आचार्य सोमदेव शास्त्री
भजन : श्री पं. घनश्याम प्रेमी
महिला एवं बलिदन सम्मेलन
22 दिसम्बर, 2013

- कै. अशोक गुलटी, मन्त्री

आर्यसमाज रोहिणी सै-7 एवं वेद प्रचार मंडल उ.प. दिल्ली द्वारा

उपनयन संस्कार एवं युवा विचार गोष्ठी

29 दिसम्बर, 2013
सायं 3:30 बजे से 7:00 बजे
यज्ञब्रह्मा : डॉ. विनय वेदालंकार
भजन : श्री श्यामवीर राघव
-: गोष्ठी विषय :-
सुखी जीवन का आधार सोलह संस्कार
मुख्य वक्ता : डॉ. विनय वेदालंकार

- राजीव आर्य, मन्त्री

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार को "संस्कृत विद्यामार्तण्ड" सम्मान

अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् वाराणसी द्वारा 26 अक्तूबर को दिल्ली संस्कृत अकादमी के कर्मठ यशस्वी **सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार** को **''संस्कृत विद्यामार्तण्ड''** की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्रतिवर्ष संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न विशिष्ट विद्वज्जनों को प्रदान किया जाता है। डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने पिछले एक वर्ष में दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से अनेकों कार्यक्रम सम्पन्न किये हैं। दिल्ली के सभी विद्यालयों के छात्रों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं जैसे- श्लोक अन्त्याक्षरी, संस्कृतभाषण, संस्कृत वाद-विवाद नाटक इत्यादि का आयोजन किया गया, जिससें लगभग दस हजार छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसी प्रकार दिल्ली स्थित सभी महाविद्यालयों के स्तर पर भी अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समारोह सम्पन्न

इलाहाबाद संग्रहालय के खचाखच भरे सभागार में 10 नवम्बर को माननीय न्यायमूर्ति श्री सुनील अम्बानी द्वारा सन्दीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान के सचिव श्री पं. रूप किशोर शास्त्री, उज्जैन तथा डा. रमेश दत्त मिश्र फैजाबाद, को तुमुल हर्षध्वनि के बीच गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित किया। दोनों विद्वानों को प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्रम् एवं 11000/- रु की राशि से अलंकृत किया। इस अवसर पर डा. रूप किशोर शास्त्री ने समिति का आभार प्रकट करते हुए कहा कि मध्यकाल में शूद्रों एवं महिलाओं को वेद पठन-पाठन के लिए द्वार सर्वथा बन्द कर दिए गए थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वसाधारण के लिए वेद पठन-पाठन के लिए द्वार खोल दिए जो अभूतपूर्व क्रान्ति का द्योतक था। हमारा सान्दीपनि प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष लाखों रुपया वेदाध्ययन क लिए अनुदान देता है।

डॉ. रमेश दत्त मिश्र ने कहा कि महर्षि दयानन्द के दार्शनिक विचारों से प्रभावित होकर मैंने ईसाई मत को छोड़कर वैदिक धर्म की दीक्षा ली और महर्षि दयानन्द का 'दार्शनिक चिन्तन' नामक ग्रन्थ की रचना की। जिस पर आज मुझे पुरस्कृत किया गया। समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में संग्राहालय के निदेशक डॉ. राजेश पुराहित ने महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश के अनेक उद्धरण देकर उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

प्रो. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने उपाध्याय जी के जीवन एवं रचनाओं पर सम्यक प्रकाश डाला तथा 11000/- रुपये देने की घोषणा की। न्यायमूर्ति श्री सुनील अम्बानी ने कहा कि वेद प्रचार की दिशा में वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत करना समिति का यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है। - ***राधे मोहन, प्रधान***

आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली का

वेद प्रचार सप्ताह

9 से 15 दिसम्बर, 2013

प्रभातफेरी - 8 दिसम्बर, 2013

यजुर्वेद परायण यज्ञ : प्रात: 7 बजे

प्रवचन : आचार्य उदयभानु शास्त्री जी

भजन : श्री श्यामवीर राघव जी

वेद कथा : डॉ. धर्मवीर जी

मुख्य अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य जी

- ***विजय भाटिया, प्रधान***

शोक समाचार

आचार्य बुद्धदेव का निधन

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम हरदुआगंज अलीगढ़ (उ.प्र.) के प्राचार्य डॉ. हरवीर सिंह (आचार्य बुद्धदेव) जी की दिनांक 29 नवम्बर, 2013 को गुरुकुल के समीप नदी के किनारे ग्वालरा गावं के पूर्व प्रधान के लड़कों ने अज्ञात हमलावरों द्वारा गोली मारकर हत्या करवा दी। आचार्य जी के साथ गुरुकुल के ब्रह्मचारी को भी निशाना बनाया गया था, किन्तु वह बच गया। (दैनिक पत्र अमर उजाला के अनुसार) षड्यन्त्रकारी गुरुकुल की बेशकीमती जमीन को हडपना चाहते थे, जबकि आचार्य जी उनका विरोध करते चले आ रहे थे।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा मंगलवार 10 दिसम्बर, 2013 को प्रात: 10 से दोपहर 1 बजे तक गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ में सम्पन्न होगी।

श्री सुदर्शन शर्मा को भगिनी शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन श्रीमती सरला शर्मा जी का दिल्ली में दिनांक 19 नवम्बर, 2013 को देहान्त हो गया। वह काफी दिनों से बीमार चल रही थीं। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ दिनांक 20 नवम्बर, 2013 को दिल्ली में किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

हैदराबाद पुस्तक मेला

स्थान : एन.टी.आर. स्टेडियम, हैदराबाद (आ.प्र.)

7 से 15 दिसम्बर, 2013 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

-: निवेदक :-

विनय आर्य, महामन्त्री ***सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक***

पुरस्कारों हेतु नाम आमन्त्रित

मातालीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विभिन्न पुरस्कारों के लिए आमन्त्रित हैं। पुरस्कार महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस 31 जनवरी 2014 को प्रदान किए जाएंगे।

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

1 एवं 2 पुरस्कार सामान्यत: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किए जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। संख्या 3 पर दिये जाने वाले पुरस्कार के लिए कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि 11000/- रुपये है।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए **31 दिसम्बर 2013** तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटो आदि के साथ अपने दूरभाष (चल) एवं पूर्ण पते सहित भेजने का कष्ट करें। - ***देवराज आर्य, मन्त्री (09997070789)***

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज ए-3 ब्लॉक, पश्चिम विहार नई दिल्ली-63 को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है आवेदक ब्रह्मचारी हो एवं यज्ञ और अन्य समस्त वैदिक संस्कार कराने में दक्ष हो। पूर्ण कार्यानुभव का विवरण दें। आवेदक को रहने का स्थान व मानदेय प्रदान किया जाएगा। सेवक की भी आवश्यकता है। एकांकी को प्राथमिकता दी जाएगी।

सम्पर्क करें-

- राजेन्द्र लाम्बा, मन्त्री (9873677099)

निर्वाचन समाचार

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली

प्रधान : श्री रामनाथ सहगल

का. प्रधान : श्री हरबंश लाल कोहली

महामन्त्री : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

कोषाध्यक्ष : श्री सरेन्द्र गुप्त

आर्यसमाज मोहाली, फेज-6, चण्डीगढ़

प्रधान : श्री निरेन्द्र गुप्ता

मन्त्री : श्री विजय आर्य

कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र गुप्ता

आर्यसमाज सिविल लाइन्स, कटनी (म.प्र.)

प्रधान : श्री अश्विनी सहगल

मन्त्री : श्री योगेश मिश्रा

कोषाध्यक्ष : श्री सन्दीप मनोचा

नि:शुल्क रिकार्डिंग कराएं

आर्य समाज के भजनोंपदेशकों एवं उपदेशकों के लिए शुभ सूचना

आर्यसमाज के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक जो अपने भजनों-उपदेशों की ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग कराने के इच्छुक हों सम्पर्क करें-**डॉ. विजय दीक्षित, वी.एम.टी. स्टूडियो**

730, सै. 6, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली-22

मो. 9213499532, 9868787522

वधू चाहिए

आर्य युवक रवि शास्त्री, गौत्र कश्यप, आयु 30 वर्ष, वजन 67 किलो, 5फुट 10 इंच, एम.ए., बी.एड, पी.एच.डी. मासिक आय 65000/- रुपये पिता का अपना व्यवसाय, के लिए सुयोग्य, सुन्दर, सुशील आर्य कन्या चाहिए, इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें-

श्री राममूरत आर्य (पिता)

आर्य वस्त्रालय, रेलवे क्रॉसिंग, धौरुआ रोड, मालीपुर, अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) मो. 07666666991, 08127978254

निर्धनों को कपड़े बांटे

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में जिला मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस. दुबे, आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक आदि राजस्थान के कोटा में दादाबाड़ी तिराहे के पास स्थित झुग्गी झोंपड़ियों में पहुंचे।

कच्ची बस्ती के रहवासी निर्धन परिवारों के बच्चों को कपड़े, महिलाओं को साड़ियां, पुरुषों को पेन्ट-शर्ट जिला सभा की ओर से दिये गये।

इस अवसर पर श्री चड्ढा ने कहा कि सक्षम लोगों को असक्षम लोगों की सहायता करनी चाहिए। जरुरतमंदों की सेवा करना भी प्रभु भक्ति के समान है।

- ***अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय मन्त्री***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 दिसम्बर, 2013 से रविवार 8 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/6 दिसम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: मंगलवार 3 दिसम्बर, 2013

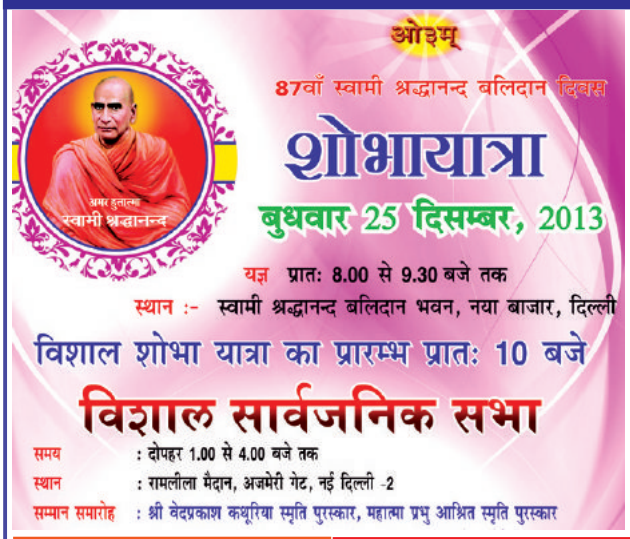

प्रतिष्ठा में,

क्या आप चाहते हैं कि–आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?
आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?
आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?
आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?
यदि हां! तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस. एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

आर्यसमाज हौजखास नई दिल्ली
भजन संध्या सम्पन्न

आर्यसमाज हौजखास नई दिल्ली के 37वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 24 नवम्बर को सायं 4 बजे से भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के अनेक नेताओं ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, उपस्थित थे। समारोह में स्वास्थ्य मन्त्री दिल्ली सरकार प्रो. किरण वालिया, पूर्व महापौर श्रीमती आरती मेहरा एवं निगम पार्षद श्रीमती अंकिता सैनी ने भी भाग लिया। – *विद्याभूषण गुप्ता, मन्त्री*

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट
के सहयोग से सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक विनय
मात्र 125/- रुपये

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
कैलेण्डर वर्ष 2014
बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर
20×30 इंच के आकार में
मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा
250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैंकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर